अमर शहीद वीर गैंदसिंह बाऊ

भारत का 28 वां राज्य छत्तीसगढ़ एक वनवासी बहुल राज्य है। इन वनवासी बंधुओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत की स्वतंत्रता समर में आहुति देने वालों में यहां के वनवासी कभी भी पीछे नहीं रहे। इस प्रदेश के वनवासी स्वतंत्रता सेनानियों में शहीद गैंदसिंह का नाम सबसे अग्रिम पंक्ति में रखा जा सकता है।

अमर शहीद गैंदसिंह का जन्म नारायणपुर के बम्हनी (बम्हनी) नारायनकोट नामक स्थान पर हुआ। कहा जाता है कि गैंदसिंह का जन्मभूमि अर्थात् चट्टान से हुई है। लाल कालीन्द्रसिंह तथा दि ब्रेट के अनुसार परलकोट के जमींदार की उपाधि भूमिया राजा की थी। केदारनाथ ठाकुर के अनुसार परलकोट बस्तर की सबसे पुरानी राजधानी है। प्राचीनकाल में इसे राज्य का दर्जा मिला हुआ था और यह माड़िया राज्यों में से एक थी एवं जमींदारी का क्षेत्र चांदा जिले से मिला हुआ था।

गैंदसिंह के जन्म स्थल बम्हनी (नारायणपुर) नारायन पाटन के चट्टान में आज भी चिन्ह मौजूद है। गैंदसिंह बचपन में अपने साथियों के साथ एक दल (गेंग) बनाया जिसका वह मुखिया थे। उस समय लोग उन्हें बाबू के नाम से जानते थें। चूंकि बाबू बात करने में चतुर एंव सिंह के समान ताकतवर एवं निडर थे। तभी बम्हनी के बुजुर्गवर उनके दल (गेंग) व सिंह के समान ताकत को देखकर उनका नाम गैंदसिंह रखे और उन्हें सब बाबू के नाम से जानते थे इसलिए उन्हें गैंदसिंह बाबू (बाऊ) बोलने लगे।

जब गैंदसिंह विवाह योग्य हुए तो ग्रामवासी देहारी परिवार के घर से उनका विवाह कराए। विवाह के पश्चात वे कोंगालीगढ़ में रहने लगे। कुछ वर्ष गुजारने के बाद वे आलरगढ़ में बस गए। आलरगढ़ उन्हें रास नहीं आया तब वे परलकोट में आकर बस गए। उनके पांच पुत्र थे कुमुद साय, मुकुंद साय, राम साय, साम साय। परलकोट में गैंदसिंह के उदारता साहस न्यायप्रियता के वजह से उन्हें राजा मानने लगे। तब उन्होंने धीरे-धीरे अपने अदम्य साहस, चतुर, निडर ताकतवर व नेतृत्व क्षमता के बल पर परलकोट में विशाल अद्भुत किला की निर्माण की। धीरे-धीरे परलकोट रियासत में चांदा तक नेतृत्व करने लगे।

गैंदसिंह अपने परलकोट रियासत के समस्त लोगों की रक्षा करते थे। निर्धन, भूखे-प्यासों को अनाज, धन-दौलत देकर सहयोग करते थे। वे जनता की अमन सुख चैन शांति के लिए सतत् कार्य करते थे। परलकोट रियासत के जनता उनकी पूजा करते थे। उनकी कीर्ति पूरे क्षेत्र में फैलने लगी। इसकी भनक जब मराठों एवं अंग्रेज को लगी तो राजा को कूचल कर उनकी धन-दौलत को हड़पने की साजिश रचने लगे।

कृष्णपाल राणा
पखांजुर काकेर (छ.ग.)

वर्तमान में सितरम से दो फर्लांग दूर नदी तट पर गैंदसिंह के किला राजमहल का अवशेष खंडहर के रूप में मौजूद है। महल के पूर्व दिशा में राजा द्वारा निर्मित कराया गया तालाब, शस्त्रागार, किला में चढ़ने वाली सड़क का अवशेष है। वहीं किला से उतरते वक्त पूर्व दिशा की ओर कुछ मूर्तियां नागदेव कालीमाता, गणेश एवं अन्य मूर्तियां मौजूद है। महल के प्रवेश द्वार के ठीक सामने भीमादेव विराजमान है तथा उसके आसपास के पत्थरों में ओखली स्पष्ट दिखाई देती है। महल के पश्चिम में गैंदसिंह द्वारा स्थापित मां दंतेश्वरी की मंदिर में सोने की मूर्ति चोरी हो गई है और वर्तमान में संगमरमर से बना मां की मूर्ति विराजमान है। मंदिर के पास फूल की एक विशाल वृक्ष है जिसमें पांच प्रकार की फूल खिलती है। एवं दो कमरों की थाना भवन की अवशेष है। महल के चारों दिशा में फलदार वृक्ष, आम की बगीचा, अमरूद, ताड़ आदि के वृक्ष हैं। दंतेश्वरी माता मंदिर के पास ही बाबा माड़िया मोंगराज विराजमान है। नदी तट पर शिव मंदिर है, वहीं राजा-रानी के खेत है, जिन्हें राजामुण्डा-रानीमुण्डा के नाम से जाना जाता है।

राजा गैंदसिंह अपने मंत्री सैनिकों, जनता के साथ बड़ी धूम-धाम से होली त्यौहार मनाते थे। होली का दहन के पश्चात उसी राख से रंग पंचमी तक रंग खेलते थे और विशाल मेला का आयोजन करते थे तब से आज भी यहां विशाल मेला का आयोजन किया जाता है। हर वर्ष की भांति अक्टूबर 1824 में भी दशहरा पर्व

मनाने जब गैंद सिंह बाऊ जगदलपुर गए थे, उसी समय अंग्रेज एवं मराठों ने परलकोट में आकर षड्यंत्र रचने लगे और उनके महल में जहां पहले से ताला लगा था वहां और एक ताला लगाकर और पत्र लटकाकर भोले-भाले आदिवासी अबूझमाड़ियों को यह कहने लगे कि गैंदसिंह मारा गया, अब उनका महल हमारे कब्जे में है एवं लूटपाट कत्लेआम कर लोगों में दहशत फैलाने लगे। जब राजा गैंदसिह नवंबर 1824 में महॅल वापस आए तो ताला व पत्र देखकर हैरान रह गए। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। तुरंत उन्होंने अपने सैनिकों की सभा बुलाई और अंग्रेजों, मराठों की लूटखसोट और शोषण से बचाने 24 दिसंबर 1824 को एक विशाल जनसभा आयोजित किया गया। परलकोट के अबूझमाड़ियों के आह्वान पर बस्तर के सभी अबूझमाड़िया 24 दिसंबर 1824 को परलकोट में एकत्रित हुए, जहां मराठों व अंग्रेजों की क्रुरता, शोषण को कूचलकर शोषण मुक्त करने रणनीति बनाई गई। इस क्रांति की सूचना धावड़ा वृक्ष की टहनी व ढोल-नगाड़ों द्वारा पूरे परलकोट रियासत में संदेश भेजा गया। धावड़ा वृक्ष के टहनी के पत्तो के सुखने के पहले एकत्रित होने लगे। गैंदसिंह दूरदर्शी थे, उन्हें इस बात की भनक लग गई थी कि अंग्रेज उनके धन-दौलत जवाहरात, सोने-चांदी हड़पना चाहते हैं। उन्होंने तमाम धन-दौलत को महल के पश्चिम दिशा में लगभग 20 किमी दूर कुएं में पाट दिए और उनके मंत्री, सिपाहियों के धन-दौलत भी उस कुएं में बंद कर दिए। उनका कहना था कि मेरे मरने के बाद मेरा धन-दौलत अंग्रेजों के हाथ नहीं लगना चाहिए।

सभी सिपाही, अबूझमाड़िया अपने तीर धनुष भाला को धार करने लगे। मधुमक्खी भी राजा के सैनिक थे। अंग्रेज सेना जैसे की परलकोट पहुंचने लगे मधुमक्खी एवं अबूझमाड़िया सेना के सामने टिक नहीं पाए। मेजर पी.वस एग्न्यु के होश उड़ गए। एग्न्यु को

बस्तर आदिवासियों का विद्रोह

1. प्रथम विद्रोह (आदिवासियों के समूह द्वारा)	: 1774
2. भोपालपटनम संघर्ष	: 1795
3. परलकोट विद्रोह	: 1824-1825
4. तारापूर विद्रोह	: 1842-1854
5. मेरिया विद्रोह	: 1842-1863
6. सोनाखान विद्रोह	: 1857
7. कोई विद्रोह	: 1859
8. मूरिया विद्रोह	: 1876
9. रानी चो रीस का विद्रोह	: 1878
10. भूमकाल विद्रोह	: 1910

और सेना की आवश्यकता हुई, उनके पहल पर 01 जनवरी 1825 को चांदा से बहुत मात्रा में सेना आ गई, तो इन विद्रोहियों ने छापामार युद्ध प्रारंभ कर दिया। विद्रोह के कारण इस अंचल में भूखमरी की स्थिति पैदा हो गई थी। विद्रोह का संचालन अलग-अलग टुकड़ियों में मांझी लोग करते थे। रात्रि में सभी विद्रोही किसी घोटुल में एकत्रित होते थे और अगले दिन का रणनीति बनाते थे। विद्रोह की तीव्रता को देखकर मेजर एग्न्यु ने 04 जनवरी 1825 को चांदा के पुलिस अधीक्षक कैप्टन पेब को निर्देश दिया कि विद्रोह को तत्काल दबाएं। भोलेभाले अबूझमाड़ियों के पास पारंपरिक अस्त्र-शस्त्र और अंग्रेजों के पास आधुनिक हथियार बंदूकें थीं। दोनों ओर से जमकर युद्ध हुआ। भोलेभाले अबूझमाड़ियों अंग्रेज के आधुनिक हथियार के सामने टिक नहीं पाए। फलस्वरूप मराठों व अंग्रेजों के सम्मिलित सेना ने 10 जनवरी 1825 को परलकोट को घेर लिया। राजा गैंदसिंह गिरफ्तार कर लिए गए तथा 20 जनवरी 1825 को उन्हें उनके महल के सामने फांसी दे दी गई। गैंदसिंह के पांच पुत्र में एक पुत्र मारा गया, चार पुत्र बच गए। उनके चारों पुत्र अंग्रेजों से बचने के लिए अलग-अलग महाराष्ट्र कांकेर छोटे डोंगर व सितरम में रहने लगे। गैंदसिंह के बड़े बेटे कुमुदसाय के परिवार आज भी सितरम में निवासरत हैं। कुमुद साय के पुत्र टेटकु सिंह के दो पुत्र मंगल सिंह और सुधरसिंह थे। मंगल सिंह के दो पुत्र सुकरू ओर सकरिया थे, सुकरू के कोई बच्चे नहीं थे, सकरिया के पांच पुत्र वर्तमान में सितरम में है जिनका नाम फरसुराम, निरसंकी, निर्धन, रतिराम व जोगेंद्र हैं। सुधरसिंह के दो-दो पुत्र मेहत्तर एवं वासु के परिवार वर्तमान में सितरम में हैं। मेहतर के पुत्र परमेश्वर व रामसुराम हैं। वासु में पुत्र का नाम रमेश व समेश है। वर्तमान में कांकेर में चैनसिंह बाऊ अपने परिवार के साथ निवासरत हैं।

शहीद गैंदसिंह का बलिदान बस्तर भूमि की मुक्ति के लिए एक अविस्मरणीय मिसाल और अध्याय है। प्रत्येक बस्तरवासी का माथा इस तथ्य से गर्वोन्नत हो जाता है कि बस्तर जैसे पिछड़े आदिवासी बाहुल्य अंचल में स्वातंत्रय चेतना के प्रथम बीजारोपण के लिए उर्वर भाव मिली। गैंदसिंह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बस्तर के ही नहीं वरन संपूर्ण छत्तीसगढ़ के प्रथम शहीद थे। इस विद्रोह को हम एक तरह से 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का शंखनाद भी कह सकते हैं। परलकोट थाना 1886में परतापुर में स्थानांतरित हुआ। आज परलकोट कांकेर जिला के पखांजुर तहसील में विरान गांव के रूप में दर्ज है। वहां महल का खण्डहर का अवशेष व पुरातत्व महत्व की सामग्री विलुप्त अवस्था में है। बादे से पूर्व दिशा में लगभग 30 किमी दूर सितरम में नदी किनारे परलकोट में होली से रंगपंचमी तक आज भी विशाल मेला का आयोजन हो रहा है।

पाना है जो वो मुकाम अभी बाकी है,
अभी तो सीखा है जमीं पर चलना आसमान की
उड़ान अभी बाकी है गुम हो लोगों में नाम मेरा,
इस नाम की पहचान अभी बाकी है।